विचार बिन्दु

मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र उसकी दस उंगलियाँ हैं। –राबर्ट कोलियर

पसीने से गढ़े गए बांध की स्मृति

विद्यालयों महाविद्यालयों में गर्मियों की छुट्टियाँ थीं। परीक्षा के बाद का आनंद था। परिणाम की प्रतीक्षा। इस पार कि उस पार। गाँव की दोपहरें तपकर तपाती। हवा आग की लपट जैसी। लुआर चलाती। धरती की साँस सूखी और भारी। ढर्रे और पगडंडियों पर पर पाँव रखना कठिन, जैसे अंगारे पर चलना हो। खेतों में लाल-भूरी मिट्टी फटकर खुल गई थी। दरारें इतनी चौड़ी थीं कि उनमें कोई चिडिया उतर जाए तो लौट न पाए। हर दरार के भीतर सोई हुई प्यास थी, जैसे पानी मांग-मांग कर थक रही हों। एक बार की खेती कट चुकी थी दरारें नहीं ढेले और कटी फसल की रह गई डंडियाँ सूखकर जमीन से लग गई थीं। कुओं का पानी कम हो गया था। यह कोई 50 साल पहले की बात की बात है।

नरो पहाड का दुर्भाग्य यह रहा कि उसके आसपास हमेशा गरीब लोग बसे। खेत छोटे थे, बरसात पर टिके हुए। नहरें बहुत देर से पहुँचीं, तब भी अधूरी। पानी की असली आस तो बरसात ही थी– तालाबों में भरता जल,कुओं में उतरता, खेतों में बहता। तालाब जीवन के थाल जैसे थे, जिनमें वर्षा का जल रखा जाता था। अन्न ही रखा मानिए। मैंने पहाड़ को कई सालों तक अपनी आँखों से देखा। पगडंडियों पर चलते-चलते, जंगल को नापते-नापते। उस समय पहाड़ भरा-पूरा था। वृक्षों की भरमार। ऊँचे-ऊँचे, गहरे और छायादार। उनके बीच मध्यम कद के वृक्ष और झाड़ियाँ भी, जिनमें छोटे जीव छिपते, पक्षी बैठते। पहाड़ की साँस हरी थी, और हर साँस में जीवन का संगीत था।

पहाड बडे बीजों वाले वृक्षों के लिए प्रसिद्ध था। उनके बीज ऐसे कि धरती में गिरें तो जैसे धरती ने कोई गर्भ धारण किया हो। उन्हीं पर पूरा वन टिका था। उन्हीं के बीच घूमते थे सांभर, भालू, कलमुंहा लंगूर, बंदर, खरहा, मोर। बड़े वृक्षों के कोटर उल्लुओं का घर थे। शाम ढलते ही सियारों की आवाज़ गूँजती। जंगल का अंधकार उनकी बोली से भर जाता। जंगली सूअर रात होते ही खेतों में उतरते और किसान अपनी फसलों को बचाने के लिए खेतों में रातभर बने रहने को मजबूर होते। घ्वांपे भरे रहते, धुएँ में मनुष्य और पशु साथ-साथ साँस लेते।

नरो पहाड का समय बदल गया। धीरे-धीरे बड़े जानवर गए। शिकार ने उन्हें मिटा दिया। उनके जाने के साथ ही बडे बीज वाले वृक्षों का भविष्य भी सूख गया। जंगल का वह चक्र, जिसमें प्राणी और वृक्ष एक-दूसरे को जन्म देते रहते थे, टूट गया। जो पुराने विशाल वृक्ष बचे थे, वे लकड़ी बनकर शहर चले गए। छोटे वृक्ष कस्बों के चूल्हों की आग में जल गए। गरीब आबादी ने अपनी भूख मिटाने के लिए पहाड़ को अपना साधन बनाया और उसी साधन को धीरे-धीरे नष्ट कर दिया। कभी जो पहाड़ घनेपन से साँस लेता देता था, अब उसकी साँस टूट-टूटकर आती है। कभी जो झूमते वृक्ष थे, अब सूखे ठूंठ खड़े हैं। कभी जहाँ हिरन दौड़ते थे, अब चराई और खनन की धूल उड़ती है।

फिर भी, नरो पहाड़ की मिट्टी में कहीं न कहीं वह हरा सपना दबा हुआ है। कोई बीज अब भी इंतज़ार कर रहा है कि उसके ऊपर आकाश झुके और पानी बरसे। कोई उल्लू अब भी टूटी शाख पर बैठकर अंधेरे में बोलता है। पहाड़ पूरी तरह गया नहीं है। वह मौन में छिपा हुआ है–जैसे स्मृति, जैसे ध्वंस के भीतर जीवन का छिपा बीज हो।

इसी उजाड पहाड के पास बाँध बन रहा था। बाँध-जिसका सपना पानी था, और हक़ीक़त मिट्टी और पत्थर थी। गाँव वालों ने ठाना था पंचायत से ठनवाया था-बरसात अगर यूँ ही बह निकली तो जीवन बचेगा नहीं। कुएँ सूख जाएँगे, खेत मैदान हो जाएँगे, बच्चे और मवेशी प्यास से मरेंगे। पुराने तालाब हैं पर पानी कम पड़ने लगा। बाँध एक उम्मीद। पानी को रोकना था, रोककर बाँटना था, बाँटकर जीना था। धूप पैंतालीस डिग्री की। मजदूर एक-एक पत्थर उठाकर बाँध में सजाते। कोई पसीने से भीगा, कोई सिर पर गीला गमछा बाँधे। उनकी पीठ पर पसीने की धाराएँ बहतीं। पैरों में छाले। होंठ फटे। आँखें लाल। लेकिन चेहरों पर एक ज़िद-जैसे वे पत्थर नहीं, आने वाले पानी की गठरी उठा रहे हों। कभी किसी पत्थर के नीचे से बिच्छू निकल आता। मजदूर ठिठकते, फिर आगे बढ़ जाते। डर और ज़हर, भूख और प्यास के सामने मामूली थे।

मैं भी जाता था। मेरी मज़दूरी छोटी रही होगी। मेरे लिए बडी। एक पत्थर उठाना, सर में ढोना। एक तगाड़ी मिट्टी खोदना सर पर ढोना-ऐसे ही सभी काम थे। हाथों में छाले, हथेलियाँ खुरदरी। कभी खून की बूँद रिस जाती। लगता था पर शायद ठीक से खून नहीं निकालता रहा होगा। मैं छिपा लेता। मुझे लगता कि मेरी हथेलियों में भी बाँध छप गया। पत्थर सिर पर रखते ही लगता मानो पूरा आसमान उठाकर ले जाया जा रहा है। आसमान तन कर बैठ गया हो। मैं लड़खड़ाता। बाकी साथी मजदूर हँसते और कहते-पत्थर भी आदमी है,उसे भी धीरे से बिठाओ। तब मैं सोचता- क्या सचमुच पत्थर आदमी हैं? या आदमी पत्थर हो चुके हैं? धीरे-धीरे मैंने मिट्टी खोदना सीखा। फावड़ा गाड़ना, शरीर का सारा भार उसमें नहीं डालना। ताकत से पटक कर गाड़ देना, फिर ऊपर डंडे से उठा देना। मिट्टी निकलती। जलते हुए कण बिखरते। उसे ढोकर बाँध में डालना होता। कभी ढेर गलत जगह गिर जाता तो मजदूर हँसते। कहते-धरती भी आदमी को धीरे-धीरे सिखाती है। जेब में कभी-कभी मजदूरी के नाम पर सिक्के मिलते। एकाध नोट भी। बिलकुल कड़क नोट। संभलकर और संभालकर रखना होता था। उन्हें खर्च में नहीं उडा सकते। बस जेब में हाथ डालकर पैसे खनक सुननी होती। नोट को खडखडाना नहीं थथोलना होता है। मेहनत की आवाज़ इतने में आ जाती थी।

गर्मी चरम पर थी। कुएँ सूख चुके थे। औरतें घड़ों के लिए झगड़तीं। जानवर जीभ बाहर निकालकर हाँफते। आसमान नीला और कठोर। फिर एक दिन आसमान ने करवट बदली। बादल घिर आए। हवा बदल गई। मिट्टी में भीगने की गंध फैल गई। मजदूर आसमान की ओर देखने लगे। किसी ने दोनों हाथ जोड़ दिए। पहली बूंद गिरी। पत्थर पर पड़ी और बाँध ने साँस ली। फिर दूसरी, तीसरी... और अचानक मूसलाधार बारिश।

दोपहर में सब साथ बैठते। सब साथी मजदूर मोटी रोटियाँ लाते। किसी के पास प्याज़,किसी के पास नमक की डली। अदला-बदली भी कर लेते प्रेम से। मैं भी रोटियाँ निकालता। हम सब मिलकर खाते। पसीने और धूल की गंध, और रोटी का स्वाद मिलकर एक अलौकिक तृप्ति देते। पानी घर से ही लाते। घूँट दो घूँट में काम चलाते। बस, गला न सूखे। यह ध्यान रखना होता। लुआर भी चलती थी न। लुआर लग जाए तो फिर अगले दिन कैसे आते। मूड़े में मोटी ढट्ठी बाँध कर रखते।

पास ही छूले के ठूँठ से नई कोमल पत्तियाँ फूट आई थीं। उन्हीं की छाया में कभी कभी बैठते। तुलसीदास जी की चौपाई जोर जोर से गाते –जो अति आतपब्याकुलहोई। तरु छाया सुख जानइसोई।।– धूप में तपती धरती पर यह छोटी छाया किसी सुन्दर स्वर्ग का ठंडा टुकडा होती। कोई मजदूर गीत उठाता-धरती, बैल, और पानी के। कोई हँसी उड़ाता। धूप थोडी हल्की हो जाती। अरे नहीं, हल्की नहीं होती, हल्की नहीं होती, हल्की लगती रही होगी। खाने के बाद गर्मी की घनघोर धूप हल्की लगती होगी। भरे पेट लुआर भी नहीं मारती। बहुत देर नहीं बैठ सकते न। बंधा कैसे बनता फिर। कभी मजदूर पूछते-तू रोज़ क्यों आता है? तेरे बब्बा जानेंगे तो नाराज़ होंगे। मैं चुप रहता। क्या कहता? कि मुझे यह सब देखना अच्छा लगता है। सीखना चाहता हूँ कि बाँध कैसे बनता है, पसीना कैसे बरसात को बुलाता है? सबकी आँखों में इंतज़ार था। कोई कहता-बरसात आए तो धान बो दूँगा। कोई-कुआँ भर जाए तो बेटी की शादी कर दूँगा। कोई-पहले जान बच जाए, फिर काम देखेंगे। उनके पास सपना छोटा था, पर पसीना बड़ा। वे गीत और विनोद में थकान को थका देते। गांव में ऐसे ही जिया जाता है।

एक दिन मिट्टी खोदते हुए एक मजदूर को साँप मिला। सब भागे। मैं वहीं खड़ा रहा। सांप भी। साँप आँखों से आँखों में देखता रहा होगा। कोई रहस्य कह रहा होगा। फिर झाड़ियों में घुस गया। शायद बोलकर गया हो-बारिश आएगी। हमने सिरनहीं हिलाया। साँप की भविष्यवाणी सुनते तब न हिलाते। बिना सुने हिलाते तो सब हंसते। धीरे-धीरे बाँध ऊँचा हुआ। पत्थरों की कतारें पहाड़ की छाती पर उठकर वहां बैठ रही जैसी। हम आसमान देखते। पर आकाश नीला और कठोर था।

पिता जी प्राथमिक विद्यालय में मास्टर थे। जल्दी में सब माटसाब कह कर बुलाते। जानते थे कि मैं मजदूरों के साथ जाता हूँ। वे चुप रहते। माटसाबकी चुप्पी को मैं अनुमति मान लेता। मान लेना ठीक रहता है। वे न रोकते, न बुलाते। पर मुझे लगता था कि वे सब जानते हैं। उनके भीतर चिंता भी रही होगी और गर्व भी रहा होगा। पता नहीं। कभी बताया नहीं उन्होंने। मैं डरता था। बाप से डरना भी आवश्यक माना जाता है। इसलिए डरता था। शाम को घर लौटते समय, बिना पूछे ही उनकी आँखें पढ़ लेता। वे नहीं कहते-थक गया? पर उनके मौन में वह प्रश्न था। मैं भी नहीं कहता-थक गया। पर मेरी चुप्पी में उत्तर था। यही उनका ढंग था-बोलकर नहीं, मौन में सब जान जाना। मौन में प्रश्न, मौन में उत्तर। मौन में गुस्से से कूट भी देते हों, शायद। बाप का मौन बेटे को गंभीरता से लेने का नियम है। कूटे हुए मान लेते थे, अपने को। हम।

गर्मी चरम पर थी। कुएं सूख चुके थे। औरतें घडों के लिए झगडतीं। जानवर जीभ बाहर निकालकर हाँफते। आसमान नीला और कठोर। फिर एक दिन आसमान ने करवट बदली। बादल घिर आए। हवा बदल गई। मिट्टी में भीगने की गंध फैल गई। मजदूर आसमान की ओर देखने लगे। किसी ने दोनों हाथ जोड दिए। पहली बूंद गिरी। पत्थर पर पडी और बांध ने सांस ली। फिर दूसरी, तीसरी... और अचानक मूसलाधार बारिश। लोग नाचने लगे। पसीने और धूल से भीगे शरीर अब पानी में भीग गए। बाँध का खाली पेट भरने लगा। पानी नीचे से ऊपर चढ़ा। उम्मीद अब सच थी। मैं भीगते-भीगते सोच रहा था-यह बाँध सिर्फ़ पानी नहीं रोक रहा, यह हम सबको जोड़ रहा है। हर पत्थर में मजदूर का पसीना, हर मिट्टी में उनकी सांस। हर बूंद में हमारी प्रतीक्षा।

बरसात कई दिनों तक चली। बाँध भर गया। गांव के कुएं धीरे धीरे जीने लग रहे थे। बरसात में खेतों में धान लहलहाने लगी। रबी की और भी फसलें। बच्चे बाँध पानी में तैरने जाने लगे। पेट में डूब गए वे ठूँठ भी, जिनकी फुटान की छाया में हम रोटी खाते थे। छूले की छाया अब पानी के नीचे थी। बिच्छू, साँप, सब छिप गए थे। लगा जैसे यादें भी पानी में डूब गई हों और वहीं नई जड़ें जमा रही हों। बाँध बन गया था-और उसके साथ मैं भी बदल गया था। मजदूरी सिर्फ़ काम नहीं, जीवन का पाठ है। पत्थर सिर्फ़ पत्थर नहीं होते, उनमें भविष्य का जल छिपा होता है। पसीना सिर्फ़ पसीना नहीं होता-वह बादल बुलाने का मंत्र है। पिता की चुप्पी ही शिक्षा थी और बाँध मनुष्य की सामूहिक जिद का रूप था।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

राजस्थान में औद्योगिक विकास की नई करवट: 'राइजिंग राजस्थान' से निवेश का उगता सूरज

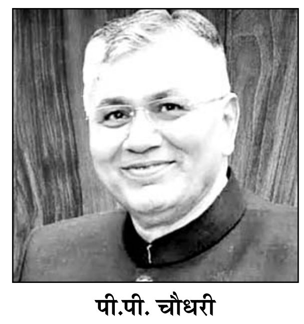

पी.पी. चौधरी

राजस्थान का बजट 2026-27 राज्य को औद्योगिक महाशक्ति बनाने की ठोस कार्ययोजना है। बजट घोषणाएं यह स्पष्ट करती हैं कि राज्य सरकार उद्योग, लॉजिस्टिक्स, आधारभूत संरचना और निवेश प्रोत्साहन को केंद्र में रखकर दीर्घकालिक आर्थिक परिवर्तन का रोडमैप तैयार कर रही है। यह परिकल्पना केवल औद्योगिक क्षेत्रों के विस्तार तक सीमित नहीं है, बल्कि राइजिंग राजस्थान जैसे निवेश अभियानों के माध्यम से वैश्विक पूंजी को आकर्षित करने का भी व्यापक प्रयास है।

बजट में स्पष्ट किया गया है कि नए औद्योगिक क्षेत्रों के विकास के साथ-साथ मौजूदा औद्योगिक क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं सड़क, बिजली, पानी आदि का सुदृढ़ीकरण किया जाएगा। इसके लिए एक हजार करोड़ रुपए की राशि व्यय करने का प्रावधान किया गया है।

यह प्रावधान केवल निर्माण गतिविधि नहीं, बल्कि उद्योगों के लिए रेडी-टू-इन्वेस्ट वातावरण तैयार करने की दिशा में बड़ा कदम है। जयपुर, भीलवाड़ा, श्रीगंगानगर, बीकानेर, नीमराना, कोटा और अजमेर जैसे औद्योगिक क्लस्टरों का सुदृढ़ीकरण राज्य के संतुलित क्षेत्रीय विकास की सोच को दर्शाता है।

औद्योगिक विकास में सबसे बड़ी चुनौती भूमि उपलब्धता होती है। सरकार ने इसके विकल्प को अपनाने के लिए आवश्यक विधिक प्रावधान करने की घोषणा की है। यह नीति, निजी भूमि स्वामियों और सरकार के बीच सहयोग का नया मॉडल है, जिससे भूमि अधिठाहण की जटिलताएं कम होगी और उद्योगों के लिए शीघ्र भूमि उपलब्ध हो सकेगी। राइजिंग राजस्थान जैसे निवेश अभियानों के लिए यह नीति अत्यंत महत्वपूर्ण आधारशिला सिद्ध होगी।

एमएसएमई के लिए प्लग एंड प्ले मॉडल

लघु एवं सूक्ष्म उद्योग किसी भी राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते हैं। बजट में प्रत्येक संभाग मुख्यालय पर लघु और छोटे उद्योगों के लिए प्लग एंड प्ले सुविधाएं स्थापित करने की घोषणा कर इसके लिए 350 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। यह सुविधा नए उद्यिमयों को तैयार ढांचा शेड, बिजली, पानी और सामान्य सेवाएं उपलब्ध कराएगी, जिससे वे बिना लंबी प्रक्रिया के उत्पादन प्रारंभ कर सकेंगे।

स्टार्टअप संस्कृति और मेक इन राजस्थान की अवधारणा को गति देने के लिए यह अत्यंत उपयोगी पहल है।

दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर के अंतर्गत जोधपुर-पाली-मारवाड़ औद्योगिक क्षेत्र के लिए लगभग 3,600 हेक्टेयर भूमि चरणबद्ध रूप से विकसित की जाएगी। प्रथम चरण में सड़क, बिजली और पानी जैसी आधारभूत संरचना पर लगभग 600 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। यह औद्योगिक क्षेत्र मेरे संसदीय क्षेत्र पाली सहित पूरे पश्चिमी राजस्थान के लिए विकास का एक नया द्वार खोलेगा। यह परियोजना राजस्थान को राष्ट्रीय औद्योगिक नक्शे पर एक नई पहचान देगी। पश्चिमी राजस्थान में औद्योगिक गतिविधियों का विस्तार न केवल स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाएगा, बल्कि निर्यात और निवेश के नए आयाम भी स्थापित करेगा।

औद्योगिक विकास केवल उत्पादन तक सीमित नहीं, बल्कि कुशल लॉजिस्टिक नेटवर्क पर निर्भर करता है। बजट में लॉजिस्टिक इको-सिस्टम के विकास के लिए भूमि आवंटन का उल्लेख किया गया है। भिवाड़ी और डीग व कुचामन क्षेत्र में लॉजिस्टिक हब विकसित करने की पहल उद्योगों को तेज़ परिवहन, कम लागत और बेहतर आपूर्ति श्रृंखला उपलब्ध कराएगी। राइजिंग राजस्थान के तहत जब विदेशी और राष्ट्रीय निवेशक राज्य में आएंगे, तो यह सुदृढ़ लॉजिस्टिक नेटवर्क उनकी पहली प्राथमिकता होगा।

औद्योगिक विकास के समानांतर शहरी आधारभूत संरचना में भी निवेश किया जा रहा है। उदाहरणस्वरूप, बारां में आरओबी से जुडी स्लिप लेन के निर्माण हेतु 11.50 करोड़ रुपए का प्रावधान तथा अन्य शहरी विकास कार्यों के लिए बजट प्रावधान यह दर्शाते हैं कि सरकार उद्योग और शहरी सुविधाओं को साथ लेकर चल रही है।

इसी प्रकार विभिन्न नगरों में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट और ड्रेनेज कार्यों के लिए भी राशि स्वीकृत की गई है. जो निवेशकों के लिए बेहतर जीवन-पर्यावरण सुनिश्चित करेगी।

राइजिंग राजस्थान राज्य की नई औद्योगिक पहचान है। सरकार की रणनीति नीतिगत स्थिरता, भूमि उपलब्धता, आधारभूत ढांचा, लॉजिस्टिक नेटवर्क और कुशल मानव संसाधन पर बल देने की है। इन सभी को एकीकृत कर निवेशकों को आकर्षित करने पर ध्यान दिया जा रहा है।

राजस्थान पहले से ही खनिज संपदा, सौर ऊर्जा, पर्यटन और हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध रहा है। अब यह राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल, रक्षा उत्पादन और लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने की दिशा में अठासर है।

इन बजटीय प्रावधानों से स्पष्ट है कि राज्य सरकार केवल घोषणाओं तक सीमित नहीं रहना चाहती।

डीएमआईसी, प्लग एंड प्ले मॉडल, औद्योगिक क्लस्टर सुदृढ़ीकरण और लॉजिस्टिक हब आदि सभी मिलकर निवेशकों के लिए एक इको-सिस्टम अप्रोच प्रस्तुत करते हैं।

राज्य की वित्तीय अनुशासन नीति और पूंजीगत व्यय में वृद्धि भी निवेशकों के विश्वास को मजबूत करत्ती है। जब सरकार स्वयं आधारभूत संरचना में निवेश करती है, तो निजी क्षेत्र का विश्वास स्वत: बढ़ता है।

राजस्थान का यह बजट औद्योगिक विकास की नई पटकथा लिखता दिखाई देता है। बजट घोषणाएं यह सिद्ध करती हैं कि राज्य सरकार निवेश, उद्योग और रोजगार को प्राथमिकता दे रही है। राइजिंग राजस्थान के माध्यम से यदि इन योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने से राजस्थान न केवल उत्तर-पश्चिम भारत का, बल्कि देश का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र बनेगा।

–पी.पी चौधरी,
सांसद एवं पूर्व केंद्रीय कॉर्पोरेट मामलात राज्य मंत्री

बीकानेर में भरा 75 लाख से ज्यादा का मायरा

- **भाई ने बहन के तीन बच्चों को दिए 51 लाख कैश और 25 लाख के गहने**
- **राजस्थान में मायरा भरने की परंपरा रियासतकाल से चली आ रही है। इस रस्म के तहत मामा अपनी बहन के बच्चों की शादी में अपनी सामर्थ्य के अनुसार कपड़े, गहने और नकद राशि भेंट करता है।**

बीकानेर । यहां मूंडसर गांव में पिछले दिनों विवाह के दौरान एक परिवार ने भव्य मायरा भरा, जिसकी चर्चा अब तक जिलेभर में है। मूंडसर गांव में स्वरूपदेसर के कालूराम सियाग ने अपनी बहन के दो बेटों और एक बेटी की शादी में 51 लाख रुपए नगद और करीब 25 लाख रुपए के सोने के साथ मायरा भरा। बीकानेर और नागौर क्षेत्र में इसी तरह के मायरे भरने की चर्चा बनी रहती है।

नापासर के पास स्थित मुंडसर गांव में 19 तारीख को धर्मपाल मुंड के परिवार में सामूहिक विवाह समारोह आयोजित हुआ। धर्मपाल किसान है। इस समारोह में उनके दो बेटों और एक बेटी की शादी हुई थी। इस अवसर पर स्वरूपदेसर निवासी कालूराम सियाग अपनी बहन का मायरा भरने पहुंचे। पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ उन्होंने थाल में 51 लाख रुपए नकद और करीब 25 लाख रुपए के सोने-चांदी के आभूषण दिए।

राजस्थान में मायरा भरने की परंपरा रियासतकाल से चली आ रही है। इस रस्म के तहत मामा अपनी बहन के बच्चों की शादी में अपनी सामर्थ्य के अनुसार कपड़े, गहने और नकद राशि भेंट करता है। बीकानेर अंचल में यह परंपरा कई बार भव्य रूप ले लेती है और इसे सामाजिक सम्मान से भी जोड़कर देखा जाता है। मुंडसर में आयोजित इस मायरे ने अपनी भव्यता के कारण विशेष ध्यान आकर्षित किया। समारोह में बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। मायरे की रकम सामने आते ही लोग मोबाइल कैमरों से वीडियो बनाने लगे। गांव और आसपास के क्षेत्रों में यह आयोजन चर्चा का केंद्र बना हुआ है।

ग्रामीण अंचल में इस तरह के भव्य मायरे को लेकर अलग-अलग प्रतिक्रियाएं भी सामने आती हैं। एक ओर इसे भाई-बहन के प्रेम और आर्थिक सामर्थ्य के प्रदर्शन के रूप में देखा जाता है, तो वहीं दूसरी ओर सामाजिक प्रतिस्पर्धी और बढ़ ते खर्चों को लेकर भी चर्चा होती है। फिलहाल मुंडसर का यह मायरा बीकानेर क्षेत्र में एक मिसाल के रूप में देखा जा रहा है, जिसने पारंपरिक रस्म को भव्यता के नए स्तर पर पहुंचा दिया है।

अंग्रेजी विद्यालयों में तीन साल बाद भी पद मंजूर नहीं

बीकानेर । कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में हिंदी से इंग्लिश मीडियम में रूपांतरित किए गए महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों पर वर्तमान सरकार का फोकस नहीं है।

हालत यह है कि तीन साल बाद भी अनेक महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में शिक्षकों के पद मंजूर नहीं हुए हैं। उधर, चयन परीक्षा में सेलेक्ट हुए लेवल वन और लेवल सेकंड के शिक्षकों को महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में पद विरुद्ध पदस्थापन दे दिया गया है। ऐसे में बीकानेर सहित प्रदेश के अन्य स्कूलों में पद विरुद्ध लगे शिक्षकों के सामने वेतन की समस्या खड़ी हो गई है। दरअसल, बिना पद स्वीकृत हुए महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में लगे तृतीय श्रेणी शिक्षकों की सैलरी हिंदी मीडियम स्कूलों के रिक्त पदों से बनाई जा रही है। हिंदी मीडियम स्कूल में संबंधित रिक्त पद पर अन्य शिक्षकों का पदस्थापन होने पर इंग्लिश मीडियम स्कूल के शिक्षक की सैलरी कई बार तीन से चार माह तक अटक रही है। हालत यह है की सैलरी के लिए महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों के शिक्षक को अन्य स्कूलों में रिक्त पद ढूंढ ने पड़ रहे हैं। प्रदेश में 3737 महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल संचालित हो रहे हैं। वर्ष 2023 में हिंदी मीडियम से इंग्लिशमीडियम में रूपांतरित हुए अनेक स्कूलों में अभी तक शिक्षकों के पद नहीं आए हैं। हालांकि माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की ओर से शिक्षकों के पदों के प्रस्ताव वित्त विभाग को भेज दिए गए हैं। लेकिन वित्त विभाग से अभी तक मंजूरी नहीं मिली है। हिंदी मीडियम स्कूलों के महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में रूपांतरित होते ही पद स्वीकृत किए जाने चाहिए। बिना पद पदस्थापन से अन्य स्कूलों में शैक्षणिक व्यवस्था प्रभावित होती है। वहीं शिक्षकों को भी वेतन के लिए दूसरी स्कूलों में रिक्त पदों को ढ ूंढ ना पड़ता है। वृंदावन एनक्लेव स्थित महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल में कार्यरत 7 शिक्षकों की सैलरी अन्य हिंदी मीडियम स्कूलों से स्वीकृत की जा रही है। इस इंग्लिश मीडियम स्कूल में अभी तक शिक्षकों के पद मंजूर नहीं हुए हैं।

खाटू श्यामजी का लक्खी मेला शुरु

जयपुर / सीकर । सीकर जिले के विश्वविख्यात खाटूधाम में बाबा लखदातार श्याम का आठ दिवसीय लक्खी फाल्गुन मेले का शुभारंभ 21 फरवरी से श्रद्धा और उल्लास के साथ हो गया है। मुख्य मेला 27 फरवरी (फाल्गुन एकादशी) को आयोजित होगा, जिसमें लाखों श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है।

- **27 फरवरी (एकादशी) को मुख्य मेला, पुलिस-प्रशासन के पुख्ता प्रबंध**

भव्य सजावट से सजा श्याम दरबार : फाल्गुन मेले को दिव्य और आकर्षक बनाने के लिए श्री श्याम मंदिर कमेटी द्वारा मंदिर परिसर को विशेष रूप से सजाया गया है। मंदिर के सिंहद्वार पर भगवान श्रीकृष्ण की मनमोहक प्रतिमा आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। मंदिर कमेटी के मंत्री मानवेन्द्र सिंह चौहान ने बताया कि इस बार 120 बंगाली कारीगरों द्वारा भव्य सजावट कराई गई है। परिसर में विभिन्न देवी-देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं, ताकि श्रद्धालु बाबा श्याम के साथ सभी देवी-देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। सुव्यवस्थित दर्शन व्यवस्था : देशभर से आने वाले श्रद्धालु रींगस डाइवर्जन, चारण मेला मैदान, लखदातार मैदान और 40 फीट नवीन मार्ग से होकर सुगमता से बाबा श्याम के दरबार में पहुंच रहे हैं। राजस्थान पुलिस, प्रशासन और मंदिर कमेटी ने दर्शन व्यवस्था को सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित बनाने के लिए विशेष इंतजाम किए हैं। राजस्थान पुलिस द्वारा मेले में व्यापक सुरक्षा प्रबंध सुनिश्चित किए गए हैं। पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा के निर्देशानुसार श्रद्धालुओं की सुरक्षा एवं सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। पुलिस अधीक्षक प्रवीण नायक नूनावत ने बताया कि मेले के दौरान त्वरित सहायता के लिए पुलिस हेल्पलाइन नंबर 112 के साथ ही मोबाइल नंबर 9667600788 जारी किया गया है। दोनों हेल्पलाइन 24 घंटे सक्रिय रहेंगी। श्रद्धालुओं की सहायता के लिए 12 पुलिस सहायता बूथ स्थापित किए गए हैं, जहां से मार्गदर्शन एवं सुरक्षा संबंधी सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। श्रद्धा, व्यवस्था और सुरक्षा का संगम : फाल्गुन मेले में जहां एक ओर भक्ति और उत्साह का माहौल है, वहीं प्रशासन और पुलिस की सतर्क व्यवस्था श्रद्धालुओं को सुरक्षित और सुगम दर्शन का भरोसा दिला रही है। खाटूधाम में इस समय श्रद्धा, भव्यता और अनुशासन का अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है।

राशिफल रविवार 22 फरवरी, 2026

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, अश्विनी नक्षत्र सायं 5:55 तक, शुक्ल योग दिन 1:09 तक, बालव करण दिन 11:10 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मकर, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-कुम्भ, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सायं 5:55 तक है। रवियोग सायं 5:55 से आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:26 से 9:51 तक, लाभ-अमृत 9:51 से 12:40 तक, शुभ 2:05 से 3:40 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:02, सूर्यास्त 6:19

मेष
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन
अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

कर्क
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

तुला
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

वृश्चिक
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मन का भय समाप्त होगा। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

धनु
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मकर
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुविधाओं में वृद्धि होगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।